

**छाया स्त्री.** (तत्.) 1. हल्का अंधेरा, साया 2. छाया वाला स्थान जहाँ किसी प्रकार की आड़ या व्यवधान के कारण सूर्य या दीपक आदि का प्रकाश न पड़ता हो 3. परछाई 4. प्रतिबिंब, दर्पण आदि में दिखाई पड़ने वाली वस्तुओं की आकृति, अक्स 5. तद्रूप वस्तु, प्रतिकृति, सदृश वस्तु 6. अनुकरण, नकल 7. कांति, दीप्ति, शरण, रक्षा 8. आर्या छंद का भेद जिसमें 17 गुरु और लघु होते हैं 9. भूत-प्रेत का प्रभाव 10. झलक।

**छायाकर पुं.** (तत्.) 1. छाया करने वाला 2. किसी के लिए छाता लेकर में चलने वाला 3. एक छंद 4. (अस्पष्ट) दीखने वाली आकृति।

**छाया कृति स्त्री.** (तत्.) छाया के रूप में (अस्पष्ट) दीखने वाली आकृति।

**छाया चित्र पुं.** (तत्.) फोटो, कैमरे से लिया गया चित्र।

**छाया चित्रण पुं.** (तत्.) कैमरे से फोटो खींचने की प्रक्रिया, फिल्म बनाना।

**छायातरु पुं.** (तत्.) छायादार वृक्ष, छायम।

**छायादान पुं.** (तत्.) बरतन के रखे तेल में अपनी छाया देखकर ग्रह शांति के लिए दान की गई राशि।

**छाया नाटक पुं.** (तत्.) ऐसा नाटक जिसमें परदे के पीछे से पात्रों पर प्रकाश डालकर परदे पर उनकी आकृति प्रदर्शित की जाती है, छायानाट्य (शैडो प्ले)।

**छायापथ पुं.** (तत्.) आकाश गंगा, देव पथ।

**छायामय पुं.** (तत्.) छायायुक्त, छायादार।

**छायायुक्त वि.** (तत्.) छाया से परिपूर्ण या भरा हुआ।

**छाया लोक पुं.** (तत्.) काल्पनिक जगत्

**छायावाद पुं.** (तत्.) आधुनिक हिंदी साहित्य की तीसरी काव्यधारा जो द्विवेदी युग के बाद आई, स्वच्छंदतावादी भावधारा को प्रश्रय देने वाली यह काव्यधारा मनुष्य और प्रकृति के मध्य रहस्यवादी

मनोवृत्ति को उजागर करती है। छायावाद को स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भी कहा जाता है।

**छायावान वि.** (तत्.) 1. छायायुक्त, छाँह वाला 2. शांतियुक्त।

**छायाविप्रतिपत्ति स्त्री.** (तत्.) रोगी की कांति, आभा, चेष्टा आदि में उलटफेर या परिवर्तन देखकर यह निश्चय करना कि अब यह आसान-मरण है या नहीं अथवा अच्छा होगा या नहीं।

**छायावेष्टित वि.** (तत्.) अस्पष्ट, धुँधला।

**छार पुं.** (तद्.) 1. क्षार, जली हुई वनस्पतियों या रासायनिक क्रिया से धुली हुई धातुओं की राख का नमक 2. खारा नमक 3. खारा पदार्थ 4. भस्म, राख, खाक 5. धूल, गर्द, रेणु।

**छाई स्त्री.** (तत्.) 1. कै करने का रोग, मचली या वमन 2. छत वाला घर, सुरक्षित जगह 3. तेज 4. अंदर का उद्गार।

**छाल स्त्री.** (तद्.) 1. पेड़ों के धड़, शाखा, टहनी और जड़ के ऊपर चिपका आवरण जो किसी-किसी में मोटा और कड़ा होता है और किसी में पतला और मुलायम, वृक्ष की त्वचा, वल्कल, बक्कल 2. छाल का बना वस्त्र 3. त्वचा, चमड़ा 4. एक प्रकार की मिठाई।

**छालना अ.क्रि.** (देश.) 1. छलनी में रखकर साफ करना, छानना, चालना 2. छेद करना, झँझरा करना।

**छाला पुं.** (देश.) 1. फफोला, क्षत वृण 2. छाल या चमड़ा 3. शीशे आदि पर उभरा हुआ दाग।

**छाली स्त्री.** (देश.) 1. कटी हुई सुपारी 2. पूगी फल।

**छाव स्त्री.** (देश.) 1. छाया, साया 2. शरण, पनाह 3. प्रतिबिंब, अक्स।

**छावनी स्त्री.** (देश.) 1. सेना के ठहरने का स्थान, किसी नगर का वह स्थान जिसमें सेना के कार्यालय, आवास, बाजार आदि होते हैं 2. छप्पर, छान 3. डेरा, पड़ाव, सैन्य शिविर।

**छासठ वि.** (देश.) छियासठ, जो गिनती में साठ और छह हो।

**छिंकना स.क्रि.** (अनु.) छींकने में प्रवृत्त करना।